

विचार बिन्दु

जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्राएं देने पर भी नहीं मिलता। –चाणक्य

दुनिया में वृद्धजनों की बढ़ती आबादी पर ध्यान देने का वक़्त

बुढ़ापा क्या है और वह किस उम्र से शुरू होता है इस बारे में शोधकर्ताओं के बीच भारी असहमति है। एक नया सर्वेक्षण बताता है कि बुढ़ापे का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों के बीच इसकी मौलिक प्रकृति के बारे में नाटकीय रूप से अलग-अलग विचार हैं। वृद्धावस्था जीवन की अनिवार्य प्रक्रियाओं में से एक है मगर उसे समझने के लिए अध्ययन में लगे वैज्ञानिक इस बात पर भी सहमत नहीं हो पा रहे हैं कि वे वास्तव में क्या अध्ययन कर रहे हैं। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में हुई एक रिसर्च कॉन्फ्रेंस में 100 से अधिक विशेषज्ञों पर यह सर्वे किया गया था जिसमें उम्र बढ़ने के बुनियादी सिद्धांतों पर शोधकर्ताओं के बीच व्यापक असहमति उजागर हुई। इन विशेषज्ञों में 29.8 प्रतिशत प्रोफेसर, 25 प्रतिशत पोस्ट-डॉक्टरेल फैलो, 22.1 प्रतिशत स्नातक छात्रों के साथ 13.5 प्रतिशत अन्य शोधकर्ता शामिल थे। उन्होंने बुढ़ापे के मौलिक प्रश्नों पर उल्लेखनीय रूप से अलग-अलग विचार व्यक्त किए। लगभग 30 प्रतिशत ने उम्र बढ़ाने के साथ काम करने की शक्ति के क्षय के रूप में बुढ़ापे को परिभाषित किया, जबकि अन्यो ने इसे शरीर के क्षय के संचय, मृत्यु दर में वृद्धि और यहां तक कि एक सामान्य विकासात्मक चरण के रूप में देखा। वृद्धावस्था की शुरुआत किस उम्र से होती है, यह सवाल भी उतना ही मनुष्य बुढ़ापे की तरफ बढ़ना शुरू कर देता है, वहीं 16.5 प्रतिशत लोगों का कहना था कि बुढ़ापा तो बच्चे के गर्भ में आने के साथ ही शुरू हो जाता है। अन्यो ने उसे प्रारंभिक विकास के दौरान या जीवन के विभिन्न चरणों में शुरू होने वाला माना। यह जानना दिलचस्प है कि किसी भी एक उमर को बहुमत का समर्थन नहीं मिला। वास्तव में राय की यह विविधता उम्र बढ़ने पर शोध करने के तरीकों को भी उजागर करती है। उम्र बढ़ने की अलग-अलग परिभाषाएं स्वाभाविक रूप से अलग-अलग प्रयोगात्मक दृष्टिकोण और शोध प्राथमिकताओं को इंगित करती हैं। उदाहरण के लिए, जो वैज्ञानिक उम्र बढ़ने को मुख्य रूप से शरीर के क्षय के रूप में देखते हैं, वे कोशिका क्षति को रोकने या उसकी मरम्मत करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि जो इसे कार्यात्मक गिरावट के रूप में देखते हैं, वे शारीरिक क्षमताओं को बनाए रखने को प्राथमिकता देते हैं।

क्या बुढ़ापे को बीमारी माना जाय, इस सवाल पर भी विशेषज्ञों में मतभेद था। सबसे आम जवाब था ‘तटस्थ’, जिसके बाद लगभग बराबर विचारों में लोग सहमत और असहमत थे। इस दार्शनिक विभाजन का इस बात पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है कि बुढ़ापे का किस तरह से इलाज किया जाता है और क्या चिकित्सकीय हस्तक्षेप को उपचार या निवारक उपायों के रूप में विकसित किया जा सकता है। एकमात्र बिंदु जिस पर वैज्ञानिक मामूली सहमत हुए आए वह था बुढ़ापे को एक मानक परिभाषा की आवश्यकता – हालांकि यहां भी, लगभग आधे लोग तटस्थ रहे या असहमत रहे। ऐसा माना जा रहा है कि इस मौलिक असहमति का अनुसंधान की दिशाओं और उपचार दृष्टिकोणों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हो सकते हैं। इन मतभेदों के बावजूद इस बात पर सहमती थी कि बुढ़ापा एक पहचान योग्य घटना के रूप में मौजूद है, कि यह स्वाभाविक रूप से हानिकारक है, और इसमें हानिकारक परिवर्तन या शरीर का क्षय शामिल है। इस बात पर आमसहमति थी कि बुढ़ापे को संभावित रूप से लक्षित कर संशोधित किया जा सकता है। इसके सर्वोत्तम तरीके क्या हो सकते हैं उस पर विचारों की अवश्य भिन्नता थी। शोध टोली के अनुसार “ज्यादातर वैज्ञानिकों को लगता है कि वे उम्र बढ़ने की प्रकृति को समझते हैं, लेकिन जाहिर तौर पर उनकी समझ अलग-अलग है।” विचारों का यह मतभेद इस क्षेत्र के लिए चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। हालांकि यह स्थिति सहयोग और आम सहमति बनाने को जटिल बना सकती है, लेकिन यह उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को समझने और संभावित रूप से चिकित्सकीय हस्तक्षेप करने के लिए दृष्टिकोणों की विविधता भी सुनिश्चित करती है। आज दुनिया भर में लोग लंबे समय तक जी रहे हैं। अब ज्यादातर लोग साठ साल या उससे ज्यादा जीने की उम्मीद कर सकते हैं। दुनिया के हर देश में आबादी में बुजुर्गों के आकार और अनुपात में वृद्धि हो रही है। चिकित्सा व आबादी विशेषज्ञ तथा समाजशास्त्री मानते हैं कि 2030 तक दुनिया में 6 में से 1 व्यक्ति 60 वर्ष या उससे अधिक आयु का होगा।

पर्यावरण के साथ व्यक्तिगत विशेषताओं जैसे कि परिवार, लिंग और हमारी जातीयता भी स्वास्थ्य में असमानताओं के कारक बनती हैं। वृद्ध लोगों को अक्सर कमजोरी या आश्रित तथा समाज के लिए बोझ माना जाता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों और समग्र रूप से समाज को इन और अन्य आयुवादी दृष्टिकोणों को उन मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो उम्रदराज लोगों के साथ भेदभाव का कारण बन सकते हैं तथा सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। भारत सरकार की राष्ट्रीय वृद्धजन नीति 1999, माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 और वरिष्ठ नागरिकों के लिए राष्ट्रीय नीति 2011, वरिष्ठ नागरिकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करती है। आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत बुजुर्गों के स्वास्थ्य के देखभाल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम और स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों में बुजुर्गों को समर्पित स्वास्थ्य सेवा प्रदान करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, चिकित्सा विज्ञान ने वरिष्ठ नागरिक श्रेणी के भीतर एक नए समूह की पहचान की है, जिसका नाम है ‘सुपर-एजर्ज’। यह शब्द 70 और 80 का दशक पूरा कर चुके लोगों को संदर्भित करता है। दुनिया भर में अब इस ‘सुपर एजर्ज’ पर उनके व्यवहार, आदतों और स्वास्थ्य संकेतकों का दीर्घकालिक अध्ययन हो रहे है। मनोप्रेमश और संज्ञात्मक गिरावट वाले लोगों के अलावा, स्वस्थ वृद्ध लोग शोधकर्ताओं के लिए रुचि का विषय हैं। जबकि सामान्य स्वास्थ्य, पारिवारिक इतिहास, मनोसामाजिक पहलुओं का भी अध्ययन किया जा रहा है ताकि समुदाय-आधारित बेहतर और लक्षित एकीकृत-देखभाल को उनकी ज़रूरतों के अनुसार डिजाइन की जा सके। कोशिश यह की जा रही है कि प्रबावी समन्वय और दीर्घकालिक देखभाल प्रणालियों को उस आबादी के अनुकूल बनाया जा सके लिए जो बुढ़ापी और सुपर-एजिंग के दौर में हैं, महत्वपूर्ण हैं। इसमें हर प्रकार के समाज की ज़रूरतों को ध्यान में रखा जा रहा है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कोई भी वृद्ध सामान्य व्यक्ति नहीं होता। कुछ 80 वर्षीय लोगों की शारीरिक और मानसिक क्षमताएं 30 वर्षीय लोगों जैसी ही होती हैं। अन्य लोगों में बहुत कम उम्र में ही क्षमताओं में महत्वपूर्ण गिरावट देखी जाती है। इससे वृद्ध लोगों के अनुभवों और आवश्यकताओं की श्रृंखला को संबोधित करती हुई एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया की ये विशेषज्ञ वकालत करते हैं। लोगों के भौतिक और सामाजिक वातावरण और उनके अवसरों और स्वास्थ्य व्यवहार पर उनके वातावरणों का प्रभाव वृद्धावस्था में देखी जाने वाली विविधता का एक बड़ा हिस्सा होता है। पर्यावरण के साथ व्यक्तिगत विशेषताओं जैसे कि परिवार, लिंग और हमारी जातीयता भी स्वास्थ्य में असमानताओं के कारक बनती हैं। वृद्ध लोगों को अक्सर कमजोरी या आश्रित तथा समाज के लिए बोझ माना जाता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों और समग्र रूप से समाज को इन और अन्य आयुवादी दृष्टिकोणों को उन मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो उम्रदराज लोगों के साथ भेदभाव का कारण बन सकते हैं तथा सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) महासभा ने 2021-2030 को स्वस्थ उम्र बढ़ाने का संयुक्त राष्ट्र दशक घोषित किया हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की देखरेख में इसका कार्यान्वयन हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र का यह दशक मानना एक वैश्विक सहयोग है जो सरकारों, नागरिक समाज, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, पेशेवरों, शिक्षाविदों, मीडिया और निजी क्षेत्र को 10 साल के ठोस, उभरेक और सहयोगी कार्रवाई करने के लिए एक साथ लाता है ताकि लंबे और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दिया जा सके। यूएनएफपीए (संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या) भारत ने अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आइआईपीएस) के साथ मिलकर ‘भारत एजिंग रिपोर्ट 2023’ जारी की थी। यह रिपोर्ट भारत में वृद्धों की देखभाल से जुड़ी चुनौतियों, अवसरों और संस्थागत प्रतिक्रियाओं पर प्रकाश डालती है, क्योंकि भारत में जनसांख्यिकीय बदलाव के कारण अब यहां जनसंख्या वृद्ध होने की तरफ अग्रसर होती जा रही है। यह रिपोर्ट विज्ञानों, नीति निर्माताओं, कार्यक्रम प्रबंधकों और बुजुर्गों की देखभाल में शामिल सभी हितधारकों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है। बुजुर्गों ने समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और वे अपनी भलाई सुनिश्चित करने के लिए समाज के सर्वोत्तम प्रयासों को पाने के हकदार हैं। रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षों में बुजुर्गों की भलाई से संबंधित कई तरह के विश्लेषण शामिल हैं, जिनमें कुछ हैं:– वरिष्ठ नागरिकों की अनूठी स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं की पूरा करने के लिए वृद्धावस्था देखभाल की व्यवस्था का विकास, बुजुर्ग आबादी की स्वास्थ्य, वित्तीय सशक्तीकरण और क्षमता निर्माण आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली सरकारी योजनाओं और नीतियों का निर्माण, कंप्यूटर और इंटरनेट उपयोग के माध्यम से वृद्धों के डिजिटल सशक्तीकरण में समुदाय आधारित संघटनों की भागीदारी, बुजुर्गों के कल्याण के लिए नीतियों को आकार देने के लिए समर्पित प्रयास तथा सामाजिक सहायता, वृद्धाश्रम और बुजुर्गों के बारे में जागरूकता अभियान के सम्मिलित प्रयासबुढ़ापे को आनंदमय बना सकते हैं।

–अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा (वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राशिफल

बुधवार 4 जून, 2025



पंडित अनिल शर्मा

मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरु-मिथुन, शुक्र-मेघ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। सर्वाथ सिद्धि और कुमार योग रात्रि 3:36 से सूर्योदय तक है। आज श्री महेश नवमी, श्री हरि जयन्ती, माहेश्वरी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ अमृत सूर्योदय से 9:01 तक, शुभ 10:43 से 12:14 तक, चर 3:49 से 5:31 तक, लाभ 5:31 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:13



मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।



तुला

व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी। नौकरियां पेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।



वृष

व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। संभावित खर्चों से धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए/दिन अच्छा रहेगा। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।



मिथुन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों दूर होने लगेगें। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेगें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कर्क

व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बरने लगेगें। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।



मकर

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मांगलिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। आज अटके हुए कार्य बरने लगेगें। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बरने लगेगें। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आवासन प्राप्त होंगे।



कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य विगड़ने का भय है। व्यावसायिक संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए/दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा।



मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

अमरावती मॉडल दुनिया के देशों को नई दिशा देगा



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने के लिए जहां दुनिया के देशों में टुकड़ी-टुकड़ी में काम हो रहा है वहीं आंध्रप्रदेश की नई राजधानी अमरावती को पूरी तरह से ग्रीप एनर्जी से संचालित शहर बनाने की दिशा में मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू ने काम भी शुरू कर दिया है। अमरावती को पूरी तरह से ग्रीन एनर्जी से संचालित शहर बनाने में करीब करीब 65 हजार करोड़ रुपए की लागत आयेगी और सोलर, पवन और जल विद्युत पर आधारित इस परियोजना में अमरावती में उपयोग आने वाली सारी बिजली रिन्यूवल एनर्जी स्रोत से ही प्राप्त होगी। सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाली जीवाश्म उर्जा का अमरावती में नामोनिशान नहीं होगा। अपने आप में यह दुनिया के लिए ग्रीन एनर्जी के सपने को अमली जामा पहनाने की बड़ी, महत्वाकांक्षी और दुनिया के देशों के लिए प्रेरणीय पहल मानी जानी चाहिए।

कोई इसे इतिहास रचने की बात करता है तो कोई ग्रीन एनर्जी के क्षेत्र में बड़ी और रचनात्मक पहल के रुप में देख रहे हैं। कहा जाए तो दुनिया के देश जिस तरह से ग्रीन एनर्जी के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं और जिस तरह से बड़े-बड़े शिखर सम्मेलनों के साझा घोषणा पत्रों में घोषणाएं होती हैं उससे अलग हटकर आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू की इस पहल को माना जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं इस परियोजना की आधारशिला रखने जा रहे हैं। कृष्णा नदी के तट पर आंध्र की नई राजधानी की आधारशिला रखी जाएगी तो ग्रीन एनर्जी का यह प्रोजेक्ट 217 वर्गमीटर को समायें हुए होगा। अमरावती को पूरी तरह ग्रीन एनर्जी युक्त दुनिया का पहला शहर बनाने के लिए 2050 तक की मांग का आकलन कर लिया गया है करीब 2700 मेगावाट विद्युत की आवश्यकता होगी। इसमें से 30 प्रतिशत सोलर और पवन आधारित उर्जा होगी तो 70 प्रतिशत बिजली का उत्पादन पनबिजली आधारित होगी।

ग्रीन एनर्जी के चार प्रमुख स्रोत हैं। इसमें सूर्य की गर्मी आधारित सोलर उर्जा, हवा के झोंकों पर आधारित पवन उर्जा, जल आधारित पन बिजली परियोजना और भूगर्भ के ताप आधारित भूतापीय उर्जा को रिन्यूवल एनर्जी के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रमुखता से सोलर, पवन और पन बिजली को लिया

शिक्षा और समर्पण

जीवन में कोई वस्तु निरर्थक नहीं है।”

उपरोक्त अस्थापिका का समर्पण भी इसी शिक्षा का है, दायरा बेसिक छोटा है। शिक्षा हमेशा से ही किन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित रही है। ब्रिटिश राज में शिक्षा के साथ-साथ अपने प्रशासनिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इसाई मिशनरीज को लगाया था-उसी के जवाब में दयानन्द सरस्वती ने कई स्कूल और कॉलेज खोले, बाल गंगाधर तिलक से प्रेरित हो कर नानाजी देशमुख के पहल करने पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भी अपने विद्यालयों की श्रृंखला शुरू की, लेकिन डिग्रियां देने वाले विश्वविद्यालय सरकारी स्तर पर ही शुरू किये गये-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (1916) और अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय (1920) को भी बाद में आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता दी गई। उनसे निकले विद्यार्थियों का अपना ही समर्पणभाव होता था, उनका अपना ही नैतिक स्तर होता था।

लेकिन, 1970-1980 के दशकों में समर्पण और नैतिकता ने सिर्फ डिग्रियां प्राप्त करने में बदल गया। मुझे याद है, उन वर्षों में कई निजी स्कूल, कॉलेज खोले गये थे जो आम तौर पर मैट्रिक या इंटर-मिजिएट के सर्टिफिकेट दिलवाने की व्यवस्था करते थे और कॉलेजों के माध्यम से स्नातक की फर्जी डिग्रियां दिलवाने का काम करते थे। जब, वैश्वीकरण का दौर चला और सरकारों ने अपने खर्चों में 30 प्रतिशत की अनिवार्य कटौतियां करने के लिए नये स्कूल-कॉलेज खोलना कम कर दिया और अस्थापिका-शिक्षकों की नियुक्तियां भी कम कर दीं।

ऐसी सीमित नौकरियों के दौर में अच्छे प्राप्तांकों और अच्छी विशिष्ट डिग्रियों की आवश्यकता पड़ी, तब निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना की इजाजत राज्य सरकारों ने देनी शुरू की। 1990 के दशक में राष्‍ट्रपू के एक ही मोहल्ले में बीस से अधिक विश्वविद्यालय खोले गये। यह शिक्षा के अनिवार्यता के दायरे में प्रमुखता से आने के कारण है। आज के दौर में शिक्षा के माध्यम से स्नातक की फर्जी डिग्रियां दिलवाने का काम करते थे। जब, वैश्वीकरण का दौर चला और सरकारों ने अपने खर्चों में 30 प्रतिशत की अनिवार्य कटौतियां करने के लिए नये स्कूल-कॉलेज खोलना कम कर दिया और अस्थापिका-शिक्षकों की नियुक्तियां भी कम कर दीं।

ऐसी सीमित नौकरियों के दौर में अच्छे प्राप्तांकों और अच्छी विशिष्ट डिग्रियों की आवश्यकता पड़ी, तब निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना की इजाजत राज्य सरकारों ने देनी शुरू की। 1990 के दशक में राष्‍ट्रपू के एक ही मोहल्ले में बीस से अधिक विश्वविद्यालय खोले गये। यह शिक्षा के अनिवार्यता के दायरे में प्रमुखता से आने के कारण है। आज के दौर में शिक्षा के माध्यम से स्नातक की फर्जी डिग्रियां दिलवाने का काम करते थे। जब, वैश्वीकरण का दौर चला और सरकारों ने अपने खर्चों में 30 प्रतिशत की अनिवार्य कटौतियां करने के लिए नये स्कूल-कॉलेज खोलना कम कर दिया और अस्थापिका-शिक्षकों की नियुक्तियां भी कम कर दीं।

का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में ग्रीन लिटिल बेबी ने कपड़े से बनी पोटलियों में हवल मेडिसिन, फलदार, छायावंत व सब्जियों की लताओं के लीवरों से बनी झोक फ्रेंडली सीड बॉल्स वितरित की। विद्यार्थियों एवं अतिथियों को पौधों के साथ इन सीड बॉल्स के उपयोग की जानकारी भी दी गई। उन्होंने कहा, पेड़ केवल हरियाली नहीं, हमारे अस्तित्व की सांस हैं। ऑक्सीजन, छाया और स्वच्छता-तीनों के वाहक

साथ ही विकसित देशों द्वारा खुले दिल से सहयोग नहीं करना बड़ा कारण बनता जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि जलवायु परिवर्तन के संकट से दुनिया के देश सावचेत नहीं हो। बल्कि इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों को लेकर रैंकिंग भी जारी होने लगी है। जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन रैंकिंग में भारत दसवें स्थान पर है हालांकि यह इससे पहले के साल की तुलना में रैंकिंग पिछड़ी है। मजे की बात यह है कि हालिया सूचकांक के विश्लेषण से साफ हो जाता है कि आज भी इस सूचकांक को एक से तीन नंबर की रैंकिंग वाले देश की प्रतीक्षा है। रैंकिंग में डेनमार्क शीर्ष पर है और उसका चौथे स्थान है।

नीदरलैंड, इंग्लेण्ड, फिलिपिन्स, मोरक्को, नावेर क्रमशः है तो भारत दसवें स्थान पर है। देश में रिन्यूवल एनर्जी की दिशा में ठोस प्रयास हो रहे हैं। गुजरात के कांडला सेज को पूरी तरह से हरित औद्योगिक क्षेत्र बनाया गया है। तो तमिलनाडू के महाबलीपुरम के शोर मंदिर को ग्रीन एनर्जी पुरातात्विक स्थल के रूप में पहचान मिल चुकी है। डेनमार्क का कोसेनहेगेन भी इसी श्रेणी में आता है। आस्ट्रेलिया का एडिलेड, कोरिया का सियोल, आइवरकोस्ट का कोकोडी, स्वीडन का मालमो और दक्षिणी अफ्रिका का केपटाउन ग्रीन एनर्जी की दिशा में बढ़ते हुए शहरों में से हैं। गुजरात के कांडला सेज में 1000 एकड़ में साढ़े तीन लाख पेड़ लगाया गया है। समुद्र के

नमक के पानी से प्रभावित क्षेत्र को जलवायु की दृष्टि से करीब-करीब बदल ही दिया गया है।

अमरावती की पूरी तरह से ग्रीन सिटी बनाने की दिशा में जो कार्य आरंभ हो रहा है वह समूची दुनिया के लिए एक मिसाल है। वहां पर सरकारी भवनों के साथ ही अन्य स्थानों पर सोलर पेनल और पवन उर्जा के स्रोत लगाये जाएंगे। पनबिजली परियोजना का संचालन होगा। पूरी तरह से ग्रीन एनर्जी का ही उपयोग होगा। हालांकि यह अपने आप में चुनौतीभरा काम होगा पर इच्छा शक्ति और कुछ नया करने की भावना से आगे बढ़ा जाता है तो फिर कोई कार्य असंभव नहीं होता है।

हालांकि केन्द्र व राज्य सरकारे अक्षय उर्जा के इस क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रही हैं। राजस्थान रिन्यूवल एनर्जी उत्पादन के क्षेत्र में समूचे देश में आगे है और भड़ला पार्क जैसे सोलर पार्क यहां विकसित हो चुके हैं। सरकार अब घरों की छतों पर सोलर एनर्जी को उत्पादन को बढ़ावा दे रही है तो खेती में सोलर पंपों और अन्य कार्यों में उपयोग सकारात्मक प्रयास माने जा सकते हैं। पर अमरावती इन सबसे अलग इसलिए हो जाती है कि यहां समग्रता से प्रयास करते हुए समूचे शहर को ग्रीन एनर्जी युक्त बनाया जा रहा है यइ सराहनीय होने के साथ ही प्रेरक भी है।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, (वरिष्ठ लेखक)

बावजूद जो आई.ए.एस. चयन परीक्षा में सबसे ऊपर होता है उसके प्राप्तांक 50 प्रतिशत के आस-पास ही होते हैं, मेरिट में उनसे नीचे के चयनितों के प्राप्तांक कम होते हैं, सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। 1000-1100 चयनितों के न्यूनतम प्राप्तांक 35 प्रतिशत के आस-पास ही होते हैं। ऐसे में उनकी क्षमता, उनकी अभिलाषा और उनकी दक्षता क्या होगी? उन्हीं में से और भी निचले स्तर के चयनितों को आई पी एस बनाया जाता है। आई पी एस अधिकारियों के आम जनता से संपर्क की व्यापकता को देखते हुए उनके ज्ञान, उनके विवेक, उनकी संवेदना और उनका समर्पण उच्चस्तर का होना अपेक्षित है जो कि आमतौर पर नहीं पाया जाता है। उन्हें तो सिर्फ आई.ए.एस., आई.पी.एस. बनना है और संयोग से उन्हीं में से कोई किसी यूनिवर्सिटी का वाइसचांसलर भी बनता है तो शिक्षा का क्या हम्र होगा, नजद ही अनुमान ही लगा सकते हैं।

इन्हीं प्रशासनिक अधिकारियों की देख-रेख में अध्यापक-गण अन्य सामान्य प्रशासनिक काम करने के लिए लगाये जाते हैं, ऐसे में बच्चों को पढ़ाने में समर्पण कहाँ से आयेगा उनमें। यही वजह है कि विभिन्न भर्ती परिक्षाओं के पर्चे घड़ल्ले से बेचे जाते हैं और अपने चहेतों की भर्ती की सम्भानाएं कम होने पर भर्ती-परीक्षाओं के अंतिम परिणामों को सम्भवतः अपने स्तर पर और विशेष परिस्थितियों में, अदालतों के माध्यम से स्थगित करवा दिया जाता है। ऐसे में नौकरियों की उम्मीद में बैठे प्रत्याशी क्या करेंगे? या तो वे अपराधियों के चंगुल में फंसेगें या नेताओं-अफसरों के चक्कर लगायेंगे- और प्रशासन की निष्ठुरताओं का अनुभव प्राप्त करते हैं, तब उनमें शिक्षा के प्रति समर्पण कैसे आयेगा? प्रतिदान वही होता है, जो कि मिला होता है।

–रामनिवास बैरवा, पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

पर्यावरण जागरूकता के तहत पौधे वितरित

यही वृक्ष है।

श्रेया ने बताया कि आगामी जुलाई में अपने 13वें जन्मदिवस पर वे 25 से 30 हजार सीड बॉल्स का वितरण शाहपुरा क्षेत्र के सभी विद्यालयों, बस स्टैंड, रेलवे प्लेटफॉर्म व सार्वजनिक स्थलों पर करेंगी। यह जिले का अब तक का सबसे बड़ा जन-सहभागिता अभियान होगा। उनकी बाल टीम दिन-रात सीड बॉल निर्माण में जुटी है। कार्यक्रम का

संचालन ज्योति शर्मा ने किया। इस अवसर पर ओम प्रकाश वर्मा, बृजेश शर्मा, लेखराज पाराशर, बालुराम कुमावत, रामचन कुमावत, नरेश व्यास सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। इस पहल की सर्वत्र सराहना की जा रही है और यह अपेक्षा की जा रही है कि ‘टीान लिटिल बेबी’ की यह हरित यात्रा जन-जन को जोड़ते हुए पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित करेगी।